एम.ए.एच.

एम.ए. (इतिहास)
प्रथम वर्ष

सत्रीय कार्य
2014–15
एम.ए. इतिहास प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रमों के लिए
जुलाई 2014 और जनवरी 2015 सत्रों के लिए

एम.एच.आई.–01 : प्राचीन और मध्यकालीन समाज
एम.एच.आई.–02 : आधुनिक विश्व
एम.एच.आई.–04 : भारत में राजनीतिक संरचनाएं
एम.एच.आई.–05 : भारतीय अर्थव्यवस्था का इतिहास

इतिहास संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110 068

प्रिय विद्यार्थी,

आपको प्रत्येक पाठ्यक्रम में एक सत्रीय कार्य करना है। सभी सत्रीय कार्य अनिवार्य हैं। प्रत्येक सत्रीय कार्य पूरे पाठ्यक्रम पर आधारित है।

सत्रीय कार्य के सभी प्रश्नों के उत्तर आप अपने शब्दों में दें। यह अत्यंत आवश्यक है कि प्रश्न का उत्तर जितने शब्दों में देने के लिए कहा जाए उसका उत्तर लगभग उतने ही शब्दों में दीजिए।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद आप इसे अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक के पास जमा करें। सत्रीय कार्य जमा करने के बाद इसकी पावती अवश्य प्राप्त कर लें और इसे अपने पास संभाल कर रख लें। अच्छा हो कि आप अपने सत्रीयकार्यों के उत्तर की फोटोकॉपी भी अपने पास रख लें।

सत्रीयकार्यों के उत्तर जाँचने के बाद जाँचे गये उत्तर अध्ययन केन्द्र से आपको लौटा दिए जाएँगे। आप इसकी माँग अवश्य करें। अध्ययन केन्द्र आपके द्वारा प्राप्त अंक विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग, इग्नू, दिल्ली को भेज देगा। इसे आपके ग्रेड कार्ड में शामिल कर लिया जाएगा।

सत्रीय कार्य जमा करना

आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सत्रांत परीक्षा देने से पहले आप सत्रींय कार्य अवश्य जमा करा दें। इसलिए आपको यह सलाह दी जाती है कि आप इसे दी गई अवधि के भीतर पूरा कर लें। एम.ए. प्रथम वर्ष में आपको कुल मिलाकर 4 सत्रीय कार्य करने हैं। सभी सत्रीयकार्यों को जमा करने की अंतिम तारीख में आपको काफी समय दिया गया है लेकिन आपको हम यह सलाह देना चाहते हैं कि आप अपने पाठ्यक्रम के अध्ययन के साथ–साथ इसे बारी बारी से पूरा करते चलें और इसी हिसाब से आप उसे जमा भी करते जाएँ ताकि आपको अंक, परामर्शदाता की टिप्पणी और मूंल्याकित सत्रीय कार्य मिलते रहें। सुनियोजित ढंग से योजना बनाकर आप निर्धारित अवधि के भीतर अपने सारे सत्रीय कार्य पूरे कर सकते हैं। सभी सत्रीयकार्यों को जमा करने के लिए अंतिम तारीख का इंतजार नहीं करें क्योकि एक ही साथ सारे सत्रीयकार्यों को हल करना आपके लिए मुश्किल हो जाएगा।

सत्र	सत्रीय कार्य जमा करने की तारीख	सत्रीय कार्य जमा करने का स्थान
जुलाई 2014 सत्र के विद्यार्थियों के लिए	**31 मार्च 2015**	अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक के पास
जनवरी 2015 सत्र के विद्यार्थियों के लिए	**30 सितम्बर 2015**	अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक के पास

सवालों का जवाब देने से पहले नीचे दिए गए निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए:

सत्रीय कार्य के लिए निर्देश

इन सत्रीय कार्यों में दो तरह से सवाल पूछे जाएँगेः

1) प्रत्येक विवरणात्मक और निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर लगभग 500 शब्दों में देना होगा और प्रत्येक प्रश्न के लिए 20 अंक निर्धारित होंगे।

2) प्रत्येक लघु श्रेणी प्रश्नों का उत्तर लगभग 250 शब्दों में देना होगा और प्रत्येक प्रश्न के लिए 10 अंक निर्धारित होंगे।

निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखने से आपके लिए उत्तर देना आसान होगाः

क) **नियोजन** : सत्रीय कार्यों को ध्यान से पढ़िए। उन इकाइयों को ध्यान से पढ़िए जिनसे ये सवाल पूछे गए हैं। प्रत्येक सवाल का जवाब देने के लिए कुछ प्रमुख बिन्दुओं को अलग से लिख लें और इन्हें तार्किक ढंग से फिर से व्यवस्थित कर लें।

ख) **चयन** : अपने जवाब की रूपरेखा बनाते समय जरूरी बातों का ही उल्लेख करें। उत्तर को विश्लेषणात्मक बनाएँ। निबंधात्मक प्रश्न में प्रस्तावना और निष्कर्ष अवश्य शामिल करें। प्रस्तावना के अन्तर्गत उत्तर के प्रमुख पक्षों को प्रस्तुत करें और यह बताएँ कि आप इस सवाल का जवाब किस तरह से देने जा रहे हैं। अपने उत्तर के उपसंहार में मुख्य बिन्दुओं का सार भी दें।

उत्तर देते वक्त इस बात का ध्यान रखें किः

- आपका उत्तर तर्कसंगत और सुसंगत हो,
- वाक्यों और अनुच्छेद के बीच स्पष्ट संबंध हो,
- आपकी शैली, अभिव्यक्ति और प्रस्तुति के साथ–साथ आपके उत्तर भी सही हों
- यह चेष्टा करें कि आपके उत्तर शब्द सीमा से अधिक न हों।

ग) **प्रस्तुति** : जब आप संतुष्ट हो जाएँ तो सत्रीय कार्य जमा करने से पहले इसे साफ–साफ लिख लें। जिन बिंदुओं पर आप बल देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित भी कर सकते हैं।

घ) **व्याख्या** : इतिहास लेखन में व्याख्या एक निंरतर प्रक्रिया है। यह आपकी योजना और चयन में पहले ही अभिव्यक्त हो चुका है। "हो सकता है", "संभव है", "हो सकता था", आदि जैसी व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ खुद ब खुद लेखन में व्याख्या के तथ्य शामिल कर लेती हैं। यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि इस प्रकार की टिप्पणियों के साथ–साथ आपके उत्तर में इसे पुष्ट करने वाले तथ्य भी शामिल होने चाहिए।

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
एम.एच.आई.–01
प्राचीन और मध्यकालीन समाज

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.आई.–01
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई.–01/
ए.एस.टी./टी.एम.ए./2014–15
पूर्णांक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य दो भागों में बंटा है। आपको हर भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक लगभग 500 शब्दों में) अवश्य देने हैं। कुल मिलाकर आपको पांच प्रश्नों के उत्तर देने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग–क

1. मानव ने कृषि का प्रारंभ किस प्रकार किया? सामाजिक संरचना पर इसका क्या प्रभाव पड़ा? **20**

2. कांस्य युगीन सभ्यताओं में लेखन और संचार के साधनों में होने वाले विकास का विस्तृत विवरण दीजिए। **20**

3. प्राचीन ग्रीस और रोमन समाजों में दास व्यवस्था का तुलनात्मक विवरण दीजिए। **20**

4. खानाबदोश साम्राज्य से आप क्या समझते हैं? अपने अध्ययन काल में खानाबदोशों के प्रवास के तरीके की चर्चा कीजिए। **20**

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर **(प्रत्येक लगभग 250 शब्दों में)** संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए: **10+10**

   क) मानव द्वारा पशुओं को पालतू बनाने की प्रक्रिया
   ख) असीरयाई साम्राज्य
   ग) माया सभ्यता
   घ) कांस्य युग में शहरीकरण

भाग–ख

6. सामंतवाद से आप क्या समझते है? यूरोप में इसकी विशेषताओं का विवरण दीजिए। **20**

7. मध्यकालीन नगरों की विशेषताओं का विवरण दीजिए। इन नगरों का ग्रामीण क्षेत्रों से क्या संबंध था? **20**

8. मध्यकाल में तकनीकी विकास ने युद्ध कला को किस प्रकार प्रभावित किया? **20**

9. मध्यकाल में समुद्री व्यापार की प्रकृति का संक्षिप्त विवरण दीजिए **20**

10. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर **(प्रत्येक लगभग 250 शब्दों में)** संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए: **10+10**

    क) प्रोटेस्टैंटवाद
    ख) अरब में इस्लाम का उदय
    ग) आरमेनियाई व्यापारी
    घ) मध्ययुगीन यूरोप में परिवार

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
एम.एच.आई.–02
आधुनिक विष्व

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.आई.–02
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई.–02/
ए.एस.टी./टी.एम.ए./2014–15
पूर्णांक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य दो भागों में बंटा है। आपको हर भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक लगभग 500 शब्दों में) अवश्य देने हैं। कुल मिलाकर आपको पांच प्रश्नों के उत्तर देने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग–क

1. नए विश्व के निर्माण में पुनर्जागरण के विभिन्न योगदानों की चर्चा कीजिए। **20**

2. पूंजीवाद का आलोचनात्मक विश्लेषण मार्क्स तथा एंगल्स के विचारों के संदर्भ में कीजिए। **20**

3. लोकतंत्र की समकालीन चुनौतियां क्या हैं ? **20**

4. सामंतवाद से पूंजीवाद की ओर होने वाले परिवर्तनों से संबंधित विभिन्न विचारों की संक्षेप में चर्चा कीजिए। **20**

5. निम्न में सें किन्हीं **दो** पर **(प्रत्येक लगभग 250 शब्दों में)** संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए : **10+10**

   क) उत्तरआधुनिकता
   ख) जनसमाज की समस्याएं
   ग) राष्ट्र और राष्ट्रवाद की परिभाषा
   घ) अल्पविकास का अर्थ

भाग–ख

6. उपनिवेशकरण से आप क्या समझते हैं? फ्रांस और इंग्लैण्ड का उपनिवेशीकरण के प्रति दृष्टिकोण में क्या अंतर था? **20**

7. द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विश्व की राजनीति में हुए प्रमुख परिवर्तनों का विश्लेषण कीजिए। **20**

8. 1917 की रूसी क्रांति के प्रभाव पर एक टिप्पणी लिखिए। **20**

9. पारिस्थितिकी पर विकास के परिणामों का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। **20**

10. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर **(प्रत्येक लगभग 250 शब्दों में)** संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए : **10+10**

    क) ध्रुवीकरण पर बहस
    ख) मुद्रण प्रौद्योगिकी का विकास
    ग) संपूर्ण युद्ध की अवधारणा
    घ) उपभोक्तावाद

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
एम.एच.आई.–04
भारत में राजनीतिक संरचनाएं

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.आई.–04
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई.–04/
ए.एस.टी./टी.एम.ए./2014–15
पूर्णांक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य दो भागों में बंटा है। आपको हर भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक लगभग 500 शब्दों में) अवश्य देने हैं। कुल मिलाकर आपको पांच प्रश्नों के उत्तर देने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग–क

1. प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में तमिलहम में उभरी राजनैतिक व्यवस्थाओं के स्वरूप की विवेचना कीजिए। **20**

2. गुप्त राजनैतिक व्यवस्था के स्वरूप का विश्लेषण कीजिए। **20**

3. प्रारंभिक मध्यकाल की ओर संक्रमण की प्रक्रिया से संबंधित इतिहासकारों के मतों का विश्लेषणात्मक परीक्षण कीजिए। **20**

4. दिल्ली सल्तनत के अधीन राज्य की विशेषताओं का उल्लेख मुदब्बिर तथा बरनी की रचनाओं के आधार पर कीजिए। **20**

5. औपनिवेशिक राज्य के स्वरूप का विश्लेषण ब्रिटिश द्वारा भारत में नियंत्रण तथा वैधता बनाए रखने के लिए उपयोग में लाए गए तरीकों के आधार पर कीजिए। **20**

भाग–ख

6. मौर्या की प्रशासिनिक व्यवस्था का वर्णन कीजिए। **20**

7. विजयनगर शासकों के अधीन नायक तथा आयागार व्यवस्थाओं की प्रमुख विशेषताओं के बारे में बताइए। **20**

8. अठाहरवीं शताब्दी में बंगाल की प्रशासनिक व्यवस्था पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। **20**

9. भारतीय सामाजिक तथा राजनैतिक व्यवस्था के बारे में प्राच्यवादियों तथा इंवेगेलिकूल परिप्रेक्ष्यों के बारे में बताइये। **20**

10. **निम्न पर (प्रत्येक लगभग 250 शब्दों में) टिप्पणियां लिखिए: 10+10**

    क) मनसव व्यवस्था
    ख) चौहदवीं तथा पंद्रहवी शताब्दियों में बंगाल का राज्य

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
एम.एच.आई.–05
भारतीय अर्थव्यवस्था का इतिहास

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.आई.–05
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई.–05/
ए.एस.टी./टी.एम.ए./2014–15
पूर्णांक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य दो भागों में बंटा है। आपको हर भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक लगभग 500 शब्दों में) अवश्य देने हैं। कुल मिलाकर आपको पांच प्रश्नों के उत्तर देने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग–क

1. प्राचीन भारतीय आर्थिक इतिहास के अध्ययन संबंधी सन् 1950 के दशक के पूर्वार्द्ध के इतिहास लेखन के रूझानों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। क्या सन् 1950 के दशक के उत्तरार्द्ध का इतिहास लेखन प्रारम्भिक बीसवीं शताब्दी के इतिहास लेखन से भिन्न है? **20**

2. हड़प्पा सभ्यता की समकालीन सांस्कृतियों का परिचय दीजिए। क्या आप इस मत से सहमत हैं कि हड़प्पा सभ्यता के विपरीत ये सभ्यताएं कृषक–पशुपालक समूहों के इर्दगिर्द केन्द्रित थीं ? **20**

3. मध्यकाल में कृषक विरोध के आम रूपों की चर्चा कीजिए। **20**

4. शहरी पतन के मुद्दे पर इतिहासकारों के मध्य विवादों की चर्चा कीजिए। आपके विचार से कौन सा मत अधिक तर्क संगत है और क्यों? **20**

5. कस्बों, नगरों एवं बंदरगाहों के विभिन्न लक्षणों को व्याख्यायित कीजिए। *मुतसद्दी* तथा *कोतवाल* द्वारा प्रयुक्त अधिकारों के विशेष संदर्भ में बन्दरगाहों तथा नगर प्रशासन के बीच अंतर का परीक्षण कीजिए। **20**

भाग–ख

6. मध्यकाल में यात्रियों को मिलने वाली आधारभूत संचार सुविधाओं पर एक टिप्पणी लिखिए। **20**

7. क्षेत्रीय राज्यों की जीवंत एवं सक्रिय सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों के संदर्भ में अठाहरवीं शताब्दी का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। **20**

8. भारत में वनवासियों के पारम्परिक अधिकार क्या थे? औपनिवेशिक हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप इसमें क्या बदलाव आये? **20**

9. उन्नीसवीं सदी के अंत तथा बीसवीं सदी के प्रारंभ में भारतीय लघु उद्योगों के विकास के पैटर्न का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। क्या आपके विचार में यह रूझान पुनरौद्योगीकरण को दर्शाता है? **20**

10. **निम्न में से किन्हीं दो पर (प्रत्येक लगभग 250 शब्दों में) टिप्पणियां लिखिए: 10+10**

    क) मंदसौर के रेशम बुनकरों की श्रेणी
    ख) *नाडु/कुर्रम* तथा *कोट्टम* में *ब्रह्मदेय* का विस्तार
    ग) *बीमा* और *रेस्पांडेशिया*
    घ) औपनिवेशिक भारत में मृत्यु और प्रजनन क्षमता के रूझान